तेरा वचन सत्य है तेरा वचन सत्य है तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

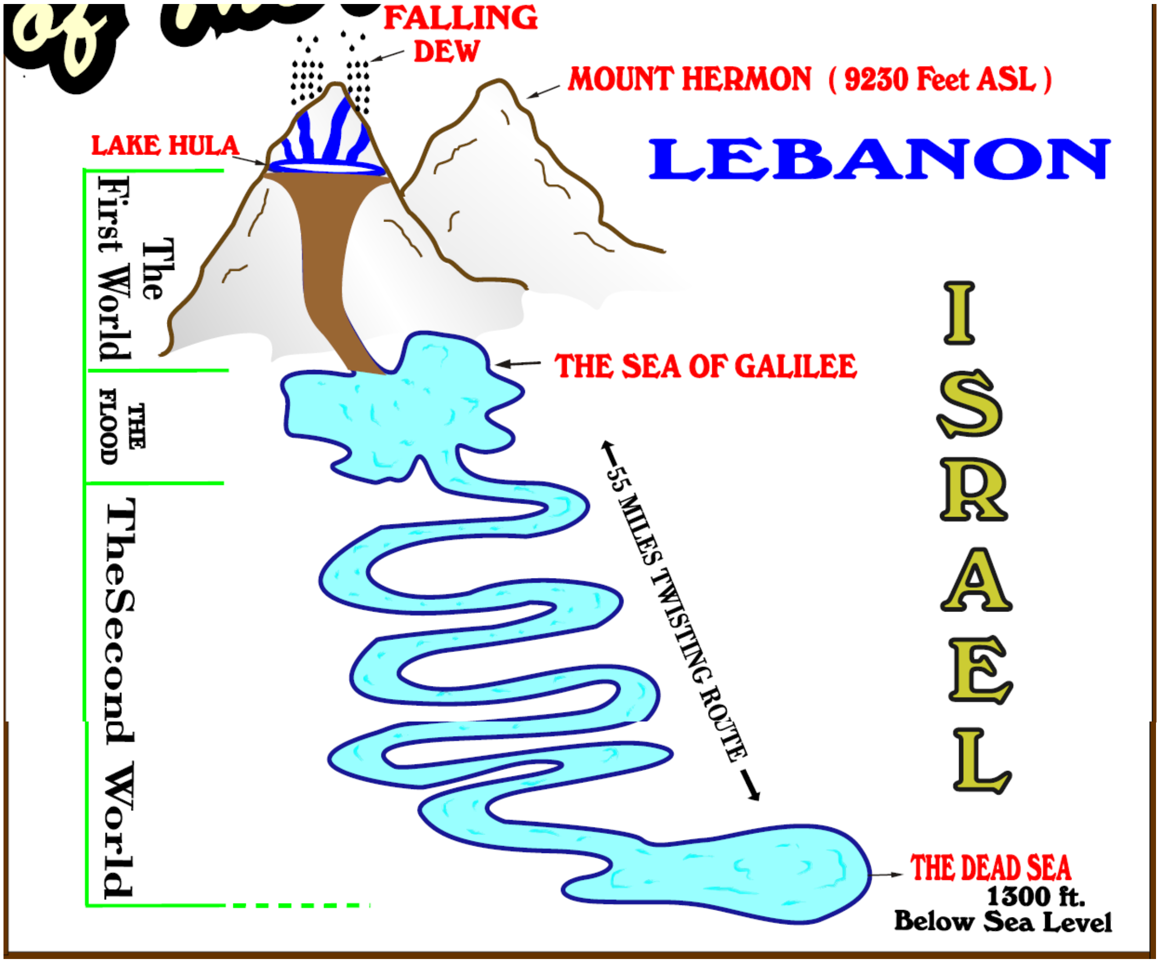

STUDY # 16

THE MYSTERY OF THE RIVER JORDAN

कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

तेरा वचन सत्य है तेरा वचन सत्य है तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

आज का विषय यरदन नदी के बारे में है।
केवल यही एक नदी है जो पुरे इस्राएल से होकर जाती है।
यह बाइबल में एक बहुत ही खास नदी है !
हम अक्सर इसका उल्लेख पाते हैं , जैसा कि

2 राजाओं (2 Kings) 5:10 तब एलीशा ने एक दूत से उसके पास यह कहला भेजा, "तू जाकर यरदन में सात बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा"। वचन में पढ़ते हैं -

यहाँ पर हम देखते हैं कि नामान नामक सिरियावासी से एलिशा भविष्यद्वक्ता ने यरदन नदी में 7 बार डूबकी मारकर शुद्ध होने को कहा था ताकि वो कोढ़ के रोग से चंगा हो जाये।
और इसके बाद हम फिर से

2 राजाओं (2 Kings) 2:8 "तब एलिय्याह ने अपनी चद्दर पकड़कर ऐंठ ली, और जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग हो गया; और वे दोनों स्थल ही स्थल पार उतर गए"।

2 राजाओं (2 Kings) 2:13,14 "फिर उसने एलिय्याह की चद्दर उठाई जो उस पर से गिरी थी, और वह लौट गया, और यरदन के तट पर खड़ा हुआ। तब उसने एलिय्याह की वह चद्दर जो उस पर से गिरी थी, पकड़ कर जल पर मारी और कहा, "एलिय्याह का परमेश्वर यहोवा कहां है"? जब उसने जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग हो गया और एलीशा पार हो गया"। वचनों में पढ़ते हैं -

यहाँ पर हम पढ़ते हैं कि कैसे एलिय्याह भविष्यद्वक्ता अपनी चद्दर को जल पर मारते हैं जिसके कारण यरदन नदी इधर उधर दो भाग में हो जाती है!!
बाद में एलिशा भी एलिय्याह के "बवंडर में होकर" स्वर्ग में उठा लिए जाने के बाद वैसा ही करते हैं।
और हम फिर से यरदन नदी के बारे में

यहोशू (Joshua) 1:1-3 "यहोवा के दास मूसा की मृत्यु के बाद यहोवा ने उसके सेवक यहोशू से जो नून का पुत्र था कहा, मेरा दास मूसा मर गया है; इसलिए अब तू उठ, कमर बान्ध, और इस सारी प्रजा समेत यरदन पार हो कर उस देश को जा जिसे मैं उनको अर्थात इस्राएलियों को देता हूं। उस वचन के अनुसार जो मैं ने मूसा से कहा, अर्थात जिस जिस स्थान पर तुम पांव धरोगे वह सब मैं तुम्हे दे देता हूं"। वचन में पढ़ते हैं -

यहाँ पर हम ये पढ़ते हैं कि कैसे इस्राएली 40 वर्षों तक जंगल में भटकने के बाद वादे की भूमि कनान में प्रवेश केवल यरदन नदी को पार करने के बाद ही करते हैं।
और फिर से हम उसी यरदन नदी के बारे में

मत्ती (Matthew) 3:13 "उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया"। वचन में पढ़ते हैं -

जी हाँ ! यहाँ तक की जब यीशु का बपतिस्मा होना था, उन्होंने बपतिस्मा के लिए यरदन नदी को चुना!

बाइबल में यरदन नदी के बारे में इतना खास क्या है?

यह क्या संकेत करता है?

आज का अध्ययन इसके उत्तर पर बहुत सारी रोशनी डालेगा !!

सबसे पहले हम नदी का और इसके मार्ग और उसके विवरण का अध्ययन करें-

यरदन नदी का स्रोत या शुरुआत, जैसा कि अधिकांश नदियों के साथ है, पहाड़ पर है,और इसकी शुरुआत लेबनान के हेर्मोन पर्वत पर होती है जो कि समुद्र की सतह से 9230 फ़ीट ऊपर है और यह सबसे भव्य और सुंदर है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

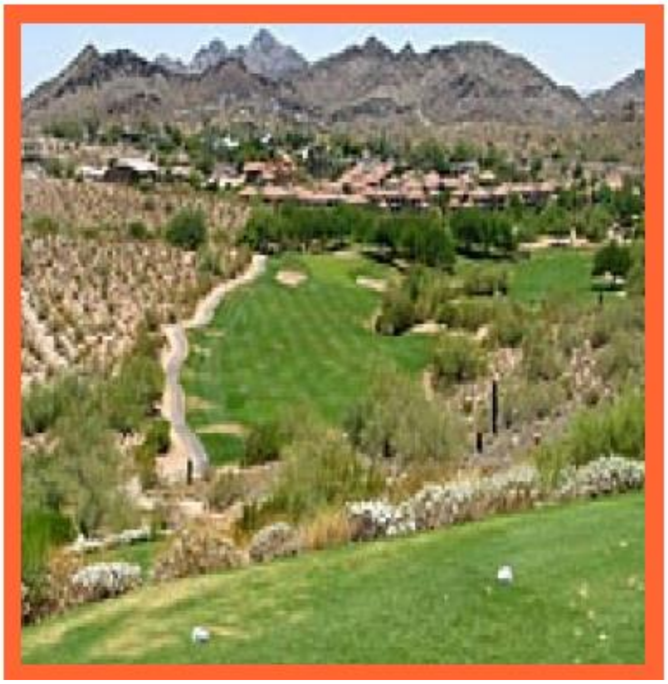

इस पहाड़ी पर ओस गिरती है और इस ओस से चार धाराएं बनती हैं जो बदले में "झील हुला" नामक एक झील का निर्माण करती हैं जिसे "झील मेरॉम" भी कहा जाता है। फलतः यह झील बहुत शांतिपूर्ण और शांत है और पहाड़ पर ऊंचे स्तर पर ऊंचाई में अवस्थित है।

इसके बाद हम देखते हैं कि इस झील का मार्ग अचानक से पहाड़ के नीचे के तरफ ऊँचा - नीचा तीव्र ढलानवाला प्रवेश लेता है, और इस प्रक्रिया में इस झील का पानी बहुत गन्दा और मटमैला हो जाता है क्योंकि यह बहुत मिट्टी और गंदगी को मिलाते जाता है।

फिर पहाड़ के नीचे आने के बाद यह मटमैली अवस्था में निरंतर बढ़ते हुए थोड़ी दूरी की यात्रा करता है और फिर गैलील के समुद्र में शामिल हो जाता है।

जब यह विपरीत पक्ष में गलील के समुद्र को छोड़ देता है तो इसका पानी बहुत साफ़ होता है लेकिन तब 55 मील के लिए यह घुमावदार और टेढ़ा मेढ़ा मार्ग लेता है!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

फिर यह मृत समुद्र में शामिल हो जाता है - जो समुद्र तल से 1300 फीट नीचे है और यह पृथ्वी पर का सबसे निचा स्थान है!!

और मृत समुद्र के बारे में आश्चर्य यह है कि छह लाख टन (साठ लाख टन) पानी हर दिन मृत समुद्र में प्रवेश करता है - फिर भी कोई अतिप्रवाह नहीं होता है और कोई निकास द्वार भी नहीं है!!

इसके अलावा जैसा कि मृत समुद्र के नाम का ही तात्पर्य है कि उस समुद्र में और उन जलों में कोई भी जीवन नहीं है, क्योंकि उसमें उच्च स्तर का नमक पाया जाता है!

और यह वह जगह है जहां यरदन नदी समाप्त होती है!

अब इन सबका हमारे लिए क्या मतलब होगा? क्या इसमें सीखने वाला कोई सबक है?

जी हाँ! इसमें यरदन नदी का रहस्य छुपा है!

अब यरदन नाम का मतलब है, हेर्मोन पर्वत पर से निकली "झील हुला" जिस क्षण में पहाड़ के नीचे की ओर गिरने लगती है, उसी समय से वह यरदन नदी बन जाती है।

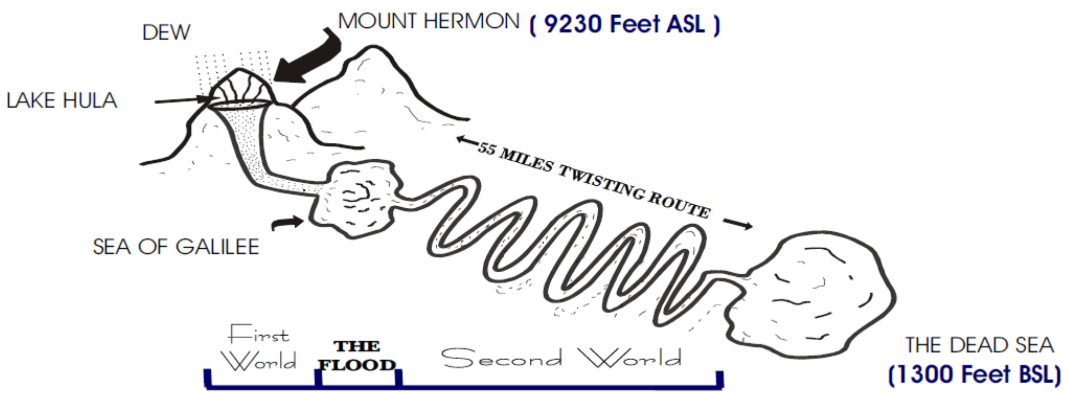

जी हाँ! इस यरदन नदी को, परमेश्वर ने दिव्य योजना में मानवजाति के मार्ग को पाप और मृत्यु में गिरने के चिन्ह के रूप में ठहराया है जो कि पहले और दूसरे संसार को शामिल करता है।

यह एक सबसे अद्भुत है, छाया है!

आइये देखें कि कैसे -

हेर्मोन पर्वत (Mount Hermon)

यह पर्वत महान महिमा और भव्यता में परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है जैसा कि हम देखते हैं कि परमेश्वर आप ही अपने बारे में कहते हैं -

यशायाह (Isaiah) 57:15 "क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है, "मैं ऊंचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूं, और उसके संग भी रहता हूं, जो खेदित और नम्र हैं, कि नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूं"।

इस प्रकार से आप देखते हैं कि हेर्मोन पर्वत स्वयं परमेश्वर का एक चिन्ह है या उनका प्रतिनिधितत्व करता है।

ओस (Dew)

यह क्या दर्शाता है?

इसका उत्तर हम पवित्रशास्त्र में ही पाते हैं,

भजन-संहिता (Psalms) 133:2,3 “यह तो उस उत्तम तेल के समान है, जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बहकर, उसके वस्त्र की छोर तक पहुंच

गया। वह हेर्मोन की उस ओस के समान है, जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है! यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है"। वचन में

जी हाँ! हारून के सिर पर डाले गये "अभिषेक के तेल" की तुलना "हेर्मोन की ओस" के समान की गई है। हम जानते हैं कि हारून के ऊपर डाला गया अभिषेक का तेल, पवित्र आत्मा का एक चिन्ह है।

उसी तरह "हेर्मोन की ओस" भी परमेश्वर की पवित्र आत्मा को दर्शाती है।

जी हाँ! हम देखते हैं कि, जैसे हेर्मोन पर्वत परमेश्वर को दर्शाता है, उसी तरह "हेर्मोन की ओस" उनकी पवित्र आत्मा को दर्शाती है!!

चार धाराएँ ⇨ यह क्या दर्शाती हैं?

पर्वत परमेश्वर को दर्शाता है, और ये "चार धाराएँ" पर्वत के ऊपर हैं, तो यह अवश्य परमेश्वर के और उनके गुणों के बारे में कुछ दर्शाती होंगी।

हाँ! हम यह कह सकते हैं कि ये परमेश्वर के व्यक्तितत्व को दर्शाती हैं!

इस विषय के गहरे विवरण को हम आने वाले पाठों में पढ़ेंगे!

आज के लिये हम सिर्फ इतना समझेंगे कि ये "चार धाराएँ" परमेश्वर के बारे में कुछ दर्शाती हैं या "उनके स्वरूप और समानता" को दर्शाती है।

⇨ हुला झील -- यह क्या दर्शाती है?

यह झील गिरने वाली "ओस" और "चारों धाराओं" से मिलकर बनी है।

यह सृष्टि किये गए पहले सम्पूर्ण मनुष्य आदम का एक सुन्दर प्रतिनिधि है।

जैसा की उत्पत्ति 1:26 वचन में बताया गया है - "परमेश्वर के स्वरुप और समानता में" और

परमेश्वर की पवित्र आत्मा की सामर्थ से (सभोपदेशक 12:7 वचन)

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! परमेश्वर ने मनुष्य को अपने चरित्र की समानता में रचा और उसे जीवन की आत्मा दी।

हुला झील का ऊंचे तल पर होना मनुष्य की सृष्टि और उसकी सम्पूर्णता की स्थिति को दर्शाता है, जो बाकि सारी पृथ्वी की रचनाओं से बहुत ऊंची है!!
जी हाँ! हुला झील मनुष्य की सृष्टि पर उसके समपूर्ण स्थिति का और उसके पाप करने से पेहले की एक समय की अवधी के लिए अदन की वाटिका में उसकी सम्पूर्णता का एक चित्र है।

अचानक नीचे गिरना ⇨ यह क्या दर्शाता है?

यह अदन की वाटिका में पाप की वजह से उस सम्पूर्णता से गिरावट को दर्शाता है।
जी हाँ! अचानक ही पाप के परिणाम से और उसके दण्ड मृत्यु के कारण असम्पूर्णता के अन्दर गिरना शुरू हुआ। (रोमियों 6:23 - "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है"...)
पाप और मृत्यु की यह परिस्थिति आदम के बच्चों और पूरी मानवजाति में फ़ैल गई, जैसा की हम पढ़ते हैं -

रोमियों (Romans) 5:12 ⇨ "इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया"।
जैसे की यरदन नदी के जल का मटमैलापन अचानक से नीचे गिरने की वजह से बढ़ता है, उसी प्रकार ये यह दर्शाता है कि आदम के बच्चों में पाप की स्थिति कई गुणा और बढ़ गई थी।

धुंधला पानी ⇨ यह पहले युग में बहुत जल्दी मनुष्य द्वारा पहुंचाए गए पाप और अपमानित होने की अवस्था को दर्शाता है, जैसे की हम

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

उत्पत्ति (Genesis) 6:5 “यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है वह निरन्तर बुरा ही होता है”। वचन में पढ़ते हैं -

जैसा की हम जानते हैं, यह उन स्वर्गदूतों की वजह से है जो मानव शरीर में प्रगट होकर, “मनुष्य की पुत्रियाँ” से विवाह करके, नेफिलम जैसा एक नया वंश प्रारम्भ किया, जो की “आधा स्वर्गदूत और आधा मनुष्य” थे।

जी हाँ! जैसा की हम उत्पति 6 के अध्याय में पढ़ते हैं, ये नया वंश मनुष्यों से कई गुणा शक्तिशाली और मानसिक रूप से श्रेष्ठ था, और नैतिक रूप से भी बहुत दुष्ट था, इस प्रकार उनके दुष्ट “तौर तरीके” मनुष्यों में भी फ़ैल गए और इस तरह पूरा संसार सम्पूर्ण रूप से दुष्ट और पापी बन गया। पाप और अपमानित होने की स्थिति की मात्रा इतनी अधिक बढ़ने के कारण, यहाँ इसे “धुंधले पानी” के रूप में दर्शाया गया है।

गलील की झील ⇨ यह क्या दर्शाती है?

यहाँ हम देखते हैं कि, यरदन नदी अपनी धुंधली स्थिति में ही गलील के सागर में प्रवेश करती है, जो की खुद एक बहुत बड़ा सरोवर है और ऐसा लगता है कि यरदन नदी का अन्त यहीं है। यह दर्शाता है कि, कैसे पहले संसार में मानवजाति का अन्त जलप्रलय से हुआ!

यरदन का साफ़ पानी फिर से गलील सागर के दूसरी तरफ़ से पुनरारम्भ करता है।

यह जल प्रलय के बाद नूह के परिवार के आठ लोगों के साथ से मानवजाति को नए सिरे से शुरुवात को दर्शाता है।

मुड़ा हुआ मार्ग ⇨ यह क्या दर्शाता है?

हमें यह याद रखना चाहिए कि, यरदन नदी का यह भाग मानवजाति के इतिहास में दूसरे संसार को दर्शाता है। इस प्रकार से ये मुड़ा हुआ मार्ग का कुछ संकेत दूसरे संसार की मानवजाति से होगा। और यह मानवजाति के पाप की स्थिति को दर्शाता है, जैसा की हम

यशायाह (Isaiah) 59:8 "...उनके पथ टेढ़े हैं, जो कोई उन पर चले वह शान्ति न पाएगा"

वचन में पढ़ते हैं।

जी हाँ! मानवजाति का मार्ग फिर से टेढ़ा -- मेढ़ा और कपटी होने लगा!!

इसे हम पढ़ते हैं -

सभोपदेशक (Ecclesiastes) 7:29 "देखो, मैं ने केवल यह बात पाई है, कि परमेश्वर ने मनुष्य को सीधा बनाया, परन्तु उन्होंने बहुत सी युक्तियां निकाली हैं"।

जी हाँ! यहाँ मनुष्य के पाप का मार्ग उनके जीवन में इतना गहरा जमा हुआ है कि, हम वचन -

नीतिवचन (Proverbs) 14:12 “ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।” में पढ़ते हैं

जी हाँ! “मृत्यु का मार्ग” निश्चित **पाप का मार्ग** ही होगा, क्योंकि मृत्यु पाप से ही आती है!

मानवजाति पाप के मार्ग में इतने गहरे रूप से जम गए हैं, कि, हम पढ़ते हैं कि, उन्हें **“पाप का मार्ग” ही अभी सही लगता** है।

जी हाँ! पाप के सभी मार्ग मानवजाति को स्वाभाविक और अच्छे लगते हैं!!

केवल अपनी आँख बन्द करके, हर उस चीज़ के बारे में सोचिए **जो हम करते हैं**, **जो हम बोलते हैं,** और **जो हम सोचते हैं** और जो आज की दुनिया में **सामान्य** है, और आप महसूस कर पाएंगे कि, किस हद तक **“पाप का मार्ग”**,

अब मनुष्य को सही लगता है!!

सचमुच में, **यह स्वभाव** सुन्दर रूप से यरदन नदी के **मुड़े हुए मार्ग** का प्रतिक है, जो इसी प्रकार गलील सागर से निकलकर मृत सागर में जुड़ने तक बहता है!

जी हाँ! यह दूसरे संसार की सम्पूर्ण अवधी है!!

मृत सागर

मृत सागर **यरदन नदी** का **अन्त** और **अन्तिम पड़ाव** है। **तो ये क्या दर्शाता है?**

यह मनुष्य के **अन्तिम पड़ाव** को दर्शाता है, जिसके बारे में हम

नीतिवचन (Proverbs) 14:12 “परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।” वचन में पढ़ते हैं

जी हाँ! मृत सागर "कब्र" की या **मृत्यु की स्थिति** को दर्शाता है, जो बाईबल में **नर्क** का **सही** अर्थ है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

प्रतिदिन **60 लाख टन पानी** मृत सागर के अन्दर प्रवेश करता है, और कुछ भी बाहर नहीं जाता है -- इसका क्या महत्व है?

इसका उत्तर हम

नीतिवचन (Proverbs) 30:16 "अधोलोक और बांझ की कोख, भूमि जो जल पी पीकर तृप्त नहीं होती, और आग जो कभी नहीं कहती, 'बस'। वचन में पढ़ते हैं --

जी हाँ! "अधोलोक" (कब्र) कभी भी **भर्ती** नहीं है और न ही कभी भी "बस" कहती है। **इसकी क्षमता अनन्त है!**

मृत सागर की गहराई सागर तल से 1300 फ़ीट नीचे है।

यह क्या दर्शाता है?

यरदन नदी की शुरुआत समुद्र तल से 9000 फ़ीट **ऊपर** से शुरू होकर, समुद्र तल से 1300 फ़ीट **नीचे** जाकर ख़त्म होती है।

ये मानवजाति के **गिरावट** को दर्शाता है--उस सम्पूर्णता से जिसमें परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की थी, यहाँ तक की जानवरों से भी नीचे की अवस्था तक वो पहुँच गया।

(**"समुद्र का तल"** पशुओं की सृष्टि की अवस्था को दर्शाता है।)

जी हाँ! मानवजाति पाप के मार्ग पर गिरकर, अत्याधिक दुष्ट बन गई है।

मानवजाति की गिरावट का यह चिन्ह **छाया** में, इन वचनों में देखते हैं -

दानिय्येल (Daniel) 4:32-37 "और तू मनुष्यों के बीच में से निकाला जाएगा, और मैदान के पशुओं के संग रहेगा; और बैलों के समान घास चरेगा; और सात काल तुझ पर बीतेंगे, जब तक कि तू न जान ले कि परमप्रधान, मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहे वह उसे दे देता है। उसी घड़ी यह वचन नबूकदनेस्सर के विषय में पूरा हुआ। वह मनुष्यों में से निकाला गया, और बैलों के समान घास चरने लगा, और उसकी देह आकाश की ओस में भीगती थी, यहां तक कि उसके बाल उकाब पक्षियों के परों से और उसके नाखून चिड़ियोंके पंजों के समान बढ़ गए। उन दिनों के बीतने पर, मुझ नबूकदनेस्सर ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाईं, और मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो

गई; तब मैं ने परमप्रधान को धन्य कहा, और जो सदा जीवित है उसकी स्तुति और महिमा यह कहकर करने लगा: उसकी प्रभुता सदा की है और उसका राज्य पीढ़ी से पीढ़ी तब बना रहनेवाला है। पृथ्वी के सब रहने वाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं, और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोककर उस से नहीं कह सकता है, तू ने यह क्या किया है? उसी समय, मेरी बुद्धि फिर ज्यों की त्यों हो गई; और मेरे राज्य की महिमा के लिये मेरा प्रताप और मुकुट मुझ पर फिर आ गया। मेरे मन्त्री और प्रधान लोग मुझ से भेंट करने के लिये आने लगे, और मैं अपने राज्य में स्थिर हो गया; और मेरी और अधिक प्रशंसा होने लगी। अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता हूं; और उसकी स्तुति और महिमा करता हूं, क्योंकि उसके सब काम सच्चे, और उसके सब व्यवहार न्याय के हैं; और जो लोग घमण्ड से चलते हैं, उन्हें वह नीचा कर सकता है”।

जहाँ बेबीलोन के **राजा नबूकदनेस्सर "सात काल"** की अवधि के लिए एक गिरावट को अनुभव करते हैं, जहाँ वह पशु की तरह बनकर ही पेश आते हैं।

यह **परमेश्वर की दिव्य योजना** में मानवजाति के अनुभवों की तसवीर है, जहाँ **"सात काल"** का भी एक अर्थ है, जिनका हम आनेवाले पाठों में अध्यन्न करेंगे।

इस प्रकार से हम देखते हैं की, यरदन नदी पहले **परिपूर्ण मनुष्य की सृष्टि** का एक **चित्र** है और बाद में मनुष्य की **गिरावट** और **पहले** और **दूसरे** संसार में मनुष्यजाति के **अनुभवों** की कहानी को दर्शाता है।

क्या यह मनुष्य की कहानी का अंत है?

परमेश्वर की कृपा से इसका उत्तर **ना** है!

यह **खुशखबरी** यहेजकेल (Ezekiel) 47:1-12 वचनों में पाई जाती है -

फिर वह मुझे भवन के द्वार पर लौटा ले गया; और भवन की डेवढ़ी के नीचे से एक सोता निकलकर पूर्व की ओर बह रहा था। भवन का द्वार तो पूर्वमुखी था, और सोता भवन की दाहिनी ओर और वेदी की दक्षिणी ओर नीचे से निकलता था। तब वह मुझे उत्तर के फाटक से होकर बाहर ले गया, और बाहर बाहर से घुमाकर बाहरी अर्थात

पूर्वमुखी फाटक के पास पहुंचा दिया, और दक्षिणी ओर से जल पसीजकर बह रहा था। जब वह पुरुष हाथ में मापने की डोरी लिए हुए पूर्व की ओर निकला, तब उसने भवन से लेकर, हजार हाथ तक उस सोते को मापा, और मुझे जल में से चलाया, और जल टखनों तक था। उसने फिर हजार हाथ माप कर मुझे जल में से चलाया, और जल घुटनों तक था, फिर ओर हजार हाथ माप कर मुझे जल में से चलाया, और जल कमर तक था। तब फिर उसने एक हजार हाथ मापे, और ऐसी नदी हो गई जिसके पार मैं न जा सका, क्योंकि जल बढ़ कर तैरने के योग्य था; अर्थात ऐसी नदी थी जिसके पार कोई न जा सकता था। तब उसने मुझ से पूछा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने यह देखा है? फिर उसने मुझे नदी के तीर लौटा कर पहुंचा दिया। लौटकर मैं ने क्या देखा, कि नदी के दोनों तीरों पर बहुत से वृक्ष हैं। तब उसने मुझ से कहा, यह सोता पूर्वी देश की ओर बह रहा है, और अराबा में उतर कर ताल की ओर बहेगा; और यह भवन से निकला हुआ सीधा ताल में मिल जाएगा; और उसका जल मीठा हो जाएगा। और जहां जहां यह नदी बहे, वहां वहां सब प्रकार के बहुत अण्डे देने वाले जीव-जन्तु जीएंगे और मछलियां भी बहुत हो जाएंगी; क्योंकि इस सोते का जल वहां पहुंचा है, और ताल का जल मीठा हो जाएगा; और जहा कहीं यह नदी पहुंचेगी वहां सब जन्तु जीएंगे। ताल के तीर पर मछवे खड़े रहेंगे, और एनगदी से ले कर ऐनेग्लैम तक वे जाल फैलाए जाएंगे, और उन्हें महासागर की सी भांति भांति की अनगिनित मछलियां मिलेंगी। परन्तु ताल के पास जो दलदल ओर गड़हे हैं, उनका जल मीठा न होगा; वे खारे ही रहेंगे। नदी के दोनों तीरों पर भांति भांति के खाने योग्य फलदाई वृक्ष उपजेंगे, जिनके पत्ते न मुर्झाएंगे और उनका फलना भी कभी बन्द न होगा, क्योंकि नदी का जल पवित्र स्थान से निकला है। उन में महीने महीने, नये नये फल लगेंगे। उनके फल तो खाने के, ओर पत्ते औषधि के काम आएंगे”।

जी हाँ! हम यहाँ एक और नदी के बारे में पढ़ते हैं **जो जीवन लाएगी!!**

और फिर से इसी नदी के बारे में हम प्रकाशितवाक्य 22:1-2 वचनों में पढ़ते हैं, जैसा की इन दो वचनों में बताया गया है।

प्रकाशितवाक्य (Revelation) 22:1-2 “फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेंम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार, जीवन का वृक्ष

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे।"

जी हाँ! यह "मृत्यु की नदी" (नीतिवचन (Proverbs) 14:12) जो यरदन नदी थी।

एक और नदी के द्वारा फिर से **जीवन पाएगी** जो की

"जीवन की नदी" है

और जैसा की ऊपर के दो वचनों में बताया गया है की यह परमेश्वर के राज्य में घटित होगा।

हम कैसे जानते हैं की, यह "जीवन की नदी" है, मृत सागर के पानी को जीवन देगी जहाँ जाकर यरदन नदी का अन्त हो जाता है?

आइये हम इसका उत्तर

यहेजकेल (Ezekiel) 47:8,9 "तब उसने मुझ से कहा, "यह सोता पूर्वी देश की ओर बह रहा है, और अराबा में उतरकर ताल की ओर बहेगा; और यह भवन से निकला हुआ सीधा ताल में मिल जाएगा; और उसका जल मीठा हो जाएगा। जहां जहां यह नदी बहे, वहां वहां सब प्रकार के बहुत अण्डे देने वाले जीवजन्तु जीएंगे और मछलियां भी बहुत हो जाएंगी; क्योंकि इस सोते का जल वहां पहुंचा है, और ताल का जल मीठा हो जाएगा; <u>और जहा कहीं यह नदी पहुंचेगी वहां सब जन्तु जीएंगे"</u>। वचन में पढ़ें-

जी हाँ! इस वचन में **मृत सागर** का उल्लेख है, जिसमें **कोई जीवन नहीं** है, और **यह नदी मृत सागर में <u>जीवन ला</u> देती है**!!

अब आप पूछ सकते हैं कि यह **"जीवन की नदी"** क्या है?

हम इस नदी के बारे में **<u>तीन वचनों</u>** में पढ़ते हैं -

यहेजकेल (Ezekiel) 47:1 "फिर वह मुझे भवन के द्वार पर लौटा ले गया; और <u>भवन की डेवढ़ी के नीचे से एक सोता निकलकर पूर्व की ओर बह रहा था</u>। भवन का द्वार तो पूर्वमुखी था, और सोता भवन की दाहिनी ओर और वेदी की दक्षिणी ओर नीचे से निकलता था"।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

भजन संहिता (Psalms) 46:4 "एक नदी है जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में अर्थात परमप्रधान के पवित्र निवास स्थान में आनन्द होता है"।

प्रकाशितवाक्य (Revelation) 22:1-2 "फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेंम्ने के सिंहासन से निकलकर"।

जी हाँ! इन वचनों में जिस नदी और उसके जल का वर्णन किया गया है, वह **सच्चाई** का एक **चिन्ह** है, जिसे प्रभु पूरे संसार को **"जीवन के जल"** के रूप में देंगे -

प्रकाशितवाक्य (Revelation) 22:17 "आत्मा और दुल्हिन दोनों कहती हैं, "आ"! और सुननेवाला भी कहे, "आ"! जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले"॥

जो कि वे **हजार वर्ष के युग** में उन्हें पाप और मृत्यु के प्रभावों से **चंगा** करने के लिये देंगे।

जी हाँ! क्योंकि **"पाप के अंदर"** रहने वाली **पूरी** मनुष्यजाति को **और कैसे** चंगा किया जा सकता है?

हम इसका उत्तर यूहन्ना (John) 17:17 के वचन में पढ़ते हैं -

"सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है"।

जी हाँ! **केवल सच्चाई** की ताकत या प्रभाव के द्वारा ही **"पाप के मार्गों"** से चंगाई मिल सकती है!

प्रिय भाइयों और बहनों, क्या आपने अब तक अपने ऊपर **सच्चाई** के **प्रभाव** को देखा है?

आइये अब हम इस नदी और उसके बहाव के कुछ विचित्र अंश के बारे में पढ़ें -

यहेजकेल (Ezekiel) 47:3-6 "जब वह पुरुष हाथ में मापने की डोरी लिए हुए पूर्व की ओर निकला, तब उसने भवन से लेकर, हजार हाथ तक उस सोते को मापा, और मुझे जल में से चलाया, और जल टखनों तक था। उसने फिर हजार हाथ माप कर मुझे जल

में से चलाया, <u>और जल घुटनों तक था</u>, फिर और हजार हाथ माप कर मुझे जल में से चलाया, और <u>जल कमर तक था</u>। तब फिर उसने एक हजार हाथ मापे, और ऐसी नदी हो गई जिसके पार मैं न जा सका, क्योंकि <u>जल बढ़ कर तैरने के योग्य था</u>; अर्थात ऐसी नदी थी जिसके पार कोई न जा सकता था। तब उसने मुझ से पूछा, "हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने यह देखा है"?

इस वचन में नदी के जल का **क्रमिक** बहाव और "जल" के स्तर का **बढ़ना**, पृथ्वी के सभी में सच्चाई के **क्रमिक बहाव** और सच्चाई की **बढ़ोतरी** को दर्शाता है। और उसी अनुपात में पूरी मानवजाति को वापस जीवन मिलेगा या उनकी **"नई सृष्टि"** होगी, जिसे हम

मत्ती (Matthew) 19:28 "यीशु ने उनसे कहा, 'मैं तुम से सच कहता हूं कि नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिहांसन पर बैठेगा"।

वचन में पढ़ते हैं

या जिसे "सब बातों का सुधार" (प्रेरितों (Acts) 3:21) के नाम से भी जाना जाता है।

जल के ये **<u>विभिन्न स्तर</u>** क्या दर्शाते हैं?

हम देखते हैं की मापने के लिए उपयोग में लाया गया पैमाना **<u>एक मनुष्य की देह</u>** है।

ऐसा क्यों?

यहाँ मनुष्य की देह **<u>पूरी मानवजाति</u>** को दर्शाती है जो विभिन्न देशों में बँटी है।

इस प्रकार से जल के विभिन्न स्तर संसार के विभिन्न देशों में सच्चाई के **<u>फैलने</u>** और **<u>स्वीकारे जाने</u>** को दर्शाते हैं - जबकि **मनुष्य की मापने** की डोरी विभिन्न देशों में के सभी मनुष्यों को दर्शाती है।

हम देखते हैं की शुरू में जल का स्तर

"जल टखनों तक था" - देह की लम्बाई की तुलना में टखनों का स्तर महत्वहीन और बहुत छोटा होता है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
<u>thekingdomgospel2874@gmail.com</u>
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इस प्रकार शुरुआत में **सच्चाई** अपने आपको संसार के बहुत ही **छोटे** और **महत्वहीन** भाग में प्रगट करेगी - जो की **इस्राएल का देश** होगा।

जी हाँ! वह **दिखाई** देनेवाला राज्य पहले इस्राएल में ही स्थापित होगा और **सच्चाई** की आशीषें **पहले** वहीं से बहेगी, जैसा की हम

जकर्याह (Zechariah) 14:8 "उस दिन यरूशलेम से बहता हुआ जल फूट निकलेगा उसकी एक शाखा पूरब के ताल और दूसरी पच्छिम के समुद्र की ओर बहेगी, और धूप के दिनों में और जाड़े के दिनों में भी बराबर बहती रहेंगी॥" वचन में पढ़ते हैं -

फिर हम पढ़ते हैं कि -

"जल घुटनों तक था" - घुटनों का स्तर देह के **एक चौथाई (1/4)** भाग को दर्शाता है।

इस प्रकार **सच्चाई** और उसकी आशीषों को इसके बाद **एक चौथाई देशों के लोग** पाकर स्वीकार करेंगे, जबकि **बाकी सारे लोग फल या परिणाम** के लिए ध्यान से उन्हें देखकर इन्तज़ार करेंगे!!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! इस संसार के देश, **प्रभु** और **उनकी सच्चाई** को खोजने के लिए इजराइल आएंगे, जैसा की हम

यशायाह (Isaiah) 2:3 “बहुत से देशों के लोग आएंगे, और आपस में कहेंगे: "आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं: तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा”।

वचन में पढ़ते हैं।

देखा! कितना स्पष्ट है!

सभी देश परमेश्वर और उनके राज्य और इसकी आशीषों को ढूंढ़ने के लिए येरूशलेम में आएंगे।

”हज़ार हाथ” -- एक समय की अवधि को दर्शाता है।

और फिर हम आगे बढ़ते हैं कि -

”जल कमर तक था” -- **कमर** तक का स्तर देह के **आधे** (1/2) भाग को दर्शाता है।

बाद में धीरे-धीरे **सच्चाई** और इसकी आशीषें बाकी के **एक चौथाई** देशों में फ़ैल जाएगी और वे उसे स्वीकार कर लेंगे। इस प्रकार से **आधी दुनिया** अपनी इच्छा से राज्य के प्रबन्धों के अन्दर आ जाएगी। जैसा की हम

जकर्याह (Zechariah) 8:22 “बहुत से देशों के वरन सामर्थी जातियों के लोग यरूशलेम में सेनाओं के यहोवा को ढूंढ़ने और यहोवा से विनती करने के लिये आएंगे”।

वचन में पढ़ते हैं -

फिर हम आगे पढ़ते हैं कि -

“जल बढ़कर तैरने के योग्य था” -- मनुष्य के कद की **पूरी** लम्बाई!

जी हाँ! जल्द ही **पूरी मनुष्यजाति** **सच्चाई** और राज्य और उसकी आशीषों में प्रवेश करेंगे! जी हाँ! सारे **“जीवित” देश** तब राज्य में प्रवेश कर चुके होंगें और राज्य की सीमा का विस्तारण **पूरे संसार में फ़ैल चुका होगा** और यह भविष्यद्वाणी का वचन पूरा हो जाएगा, जैसा की हम

भजन संहिता (Psalms) 72:8 "वह समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा"।
वचन में पढ़ते हैं।
बढ़ोतरी की इस **क्रमिक** प्रक्रिया को हम
दानिय्येल (Daniel) 2:35 "तब लोहा, मिट्टी, पीतल, चान्दी और सोना भी सब चूर चूर हो गए, और धूपकाल में खलिहानों के भूसे के समान हवा से ऐसे उड़ गए कि उनका कहीं पता न रहा; और वह पत्थर जो मूर्ति पर लगा था, वह बड़ा पहाड़ बन कर सारी पृथ्वी में फैल गया"॥
छोटे **पत्थर** को बड़े पहाड़ में बदलते हुए उदहारण में भी देखते हैं, जो की परमेश्वर के राज्य की आशीषों और उसके **बढ़ोतरी** की प्रक्रिया को दर्शाता है।
जिसे हम
यशायाह (Isaiah) 9:7 "उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए ओर संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा"॥
वचन में भी पढ़ते हैं–
जी हाँ! वह राज्य और देशों पर उसकी सरकार या **प्रभुता** धीरे-धीरे होगी और उसकी "बढ़ोतरी का अन्त न होगा" अर्थात वह **क्रमिक** रूप से **और लगातार** पूरे संसार में फैलेगा।

यह **यीशु** का अपने राज्य के कार्य में **पहली चाबी के** खोलने को भी दर्शाता है।

इसे हम
प्रकाशितवाक्य (Revelation) 1:18 "... और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं"। वचन में पढ़ते हैं --
जी हाँ! यह **"मृत्यु"** या लूका (Luke) 9:60 वचन के अनुसार इस संसार के **"जीवित मरे हुओं"** की **पहली चाबी** है।
यह उन लोगों को फिर से जीवन देना है जो दूसरे संसार के अन्त में **जीवित** तो होंगे पर **"मृत्यु" के दण्ड की अवस्था में रहेंगे**।

जीवित लोगों का मृत्युदण्ड की स्थिति में रहने को यहाँ **"मृत्यु"** कहकर सम्बोधित किया गया है।

इसके बाद **अगला कार्य आरम्भ** होगा जिसके बारे में हम

यहेजकेल (Ezekiel) 47:8,9 "तब उसने मुझ से कहा, "यह सोता पूर्वी देश की ओर बह रहा है, और अराबा में उतरकर ताल की ओर बहेगा; और यह भवन से निकला हुआ सीधा ताल में मिल जाएगा; और उसका जल मीठा हो जाएगा। जहां जहां यह नदी बहे, वहां वहां सब प्रकार के बहुत अण्डे देने वाले जीवजन्तु जीएंगे और मछलियां भी बहुत हो जाएंगी; क्योंकि इस सोते का जल वहां पहुंचा है, और ताल का जल मीठा हो जाएगा; और जहा कहीं यह नदी पहुंचेगी वहां सब जन्तु जीएंगे"।

वचनों में पढ़ते हैं --

जी हाँ! यह **"ताल"** या **"सागर"** जब नदी के जल को पाता है तो उसका जल मीठा हो जाता है या वह "चंगा" हो जाता है। इस प्रकार से यह दर्शाता है कि जिस "ताल" या "सागर" को जीवन प्राप्त होता है वह **मृत सागर** है!

और इस सागर में की बहुत **"मछलियां" मानवजाति** को दर्शाती है **(मत्ती 4:19)**।

यह **दूसरी चाबी** को **"अधोलोक"** या **"नर्क"** या

कब्रों में पड़े हुए मृतकों के लिए उपयोग में लाये जाने को दर्शाता है।

इस प्रकार से मनुष्यजाति के **"जीवित और मृत"** दोनों, जीवन प्राप्त करना शुरू करेंगें--

जी हाँ! यह मरे हुओं के **पुनरुत्थान** का समय होगा।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

फिर हम आगे

यहेजकेल (Ezekiel) 47:12 नदी के दोनों किनारों पर भांति भांति के खाने योग्य फलदाई वृक्ष उपजेंगे, जिनके पत्ते न मुर्झाएंगे और उनका फलना भी कभी बन्द न होगा, क्योंकि नदी का जल पवित्र स्थान से निकला है। उनमें महीने महीने नये नये फल लगेंगे। उनके फल तो खाने के, ओर पत्ते औषधि के काम आएंगे"।

वचन में पढ़ते हैं -

यह "वृक्ष" और "पत्ते" क्या दर्शाते हैं?

इसका वर्णन हम फिर से

प्रकाशितवाक्य (Revelation) 22:2 "उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति जाति के लोग चंगे होते थे"।

वचन में देखते हैं -

☞ यह **"वृक्ष"** और **"पत्ते"** क्या दर्शाते हैं?

"वृक्ष", **"फल"** और **"पत्तों"** जैसे चिन्हों का उपयोग हमें

अदन की वाटिका में वापस ले जाता है!

वहां "जीवन का वृक्ष" निरन्तर **बने रहने वाले** जीवन का चिन्ह था -- या **अनन्त जीवन का चिन्ह था (उत्पत्ति (Genesis) 3:22)**।

इन चिन्हों का क्या मतलब हो सकता है?

आइये हम देखें --

पत्ते

आज पत्तों का उपयोग दवाईयाँ बनाने के लिए और बिमारियों से चांगाई पाने के लिए किया जाता है।

उदाहरण: भारत में आयुर्वेदिक प्रणाली में पत्तों और पौधों का उपयोग बिमारियों को ठीक करने के लिए दवाईयाँ बनाने में होता है।

यहां "पत्ते" **चंगाई** को दर्शाते हैं या उसका चिन्ह हैं जो कि

शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक आदि हो सकती है।

ताकि पश्चाताप करने वालों को धीरे से परिपूर्णता की और उठाया जा सके।

बाईबल में इस प्रक्रिया को "सुधार" कहा जाता है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जिसके बारे में हम **प्रेरितों 3:21** / **मत्ती 19:28** वचनों में पढ़ते हैं।

प्रेरितों (Acts) 3:21 "अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह सब बातों का सुधार न कर ले जिसकी चर्चा प्राचीन काल से परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है"।

मत्ती (Matthew) 19:28 यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं कि नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिहांसन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे"।

जी हाँ! पत्तियां सुधार या **"नई सृष्टि"** / **"फिर से जिलाया जाना"** या पूरी मानवजाति का **अपरिपूर्णता से परिपूर्णता** की ओर **चंगाई** को दर्शाता है!

फल ⇨ ये **भोजन** और पोषण का चिन्ह है जो जीवन देता है। यहाँ पर यह **"जीवन देनेवाले भोजन"** को दर्शाता है **जिसे** उस समय पूरी मानवजाति के लिए उपलब्ध कराया जाएगा।

जी हाँ! यह **आत्मिक भोजन** या परमेश्वर का वचन ही है जो **खाया** जाएगा, जैसा की हम

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यिर्मयाह (Jeremiah) 15:16 "जब तेरे वचन मेरे पास पहुंचे, तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया ...। वचन में पढ़ते हैं...

यहाँ पर वचनों को **“खा”** लेने का मतलब यह है कि वचनों से मिले **निर्देशों** और **प्रोत्साहनों** को

"अपना लेना" या उनके प्रति **आज्ञापालन** करना, जो कि जीवन और उसे बनाए रखने का **"मार्ग"** दिखाएंगे।

इस प्रकार से उस अनन्त जीवन को प्राप्त किया जाएगा!

अनन्त जीवन क्या है?

क्या परमेश्वर हमें अनन्त जीवन **दे चुके** हैं या वे हमें अनन्त जीवन **देनेवाले हैं**? हम **“अनंत जीवन”** के बारे में इस सवाल का उत्तर

1 यूहन्ना (1 John) 5:11 "परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उनके पुत्र में है"। वचन में पढ़ते हैं

जी हाँ! हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने हमें **पहले** से ही अनन्त जीवन दे दिया है और यह जीवन “उनके पुत्र” **में** है।

इसका मतलब क्या है? आप पुत्र से इस जीवन को कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

इसका उत्तर हम

1 यूहन्ना (1 John) 5:12 “जिसके पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है”। वचन में पढ़ते हैं -

"जिसके पास पुत्र है" का क्या मतलब है?

इसका मतलब है उनका **"स्वरुप"** हम में होना -

और **पुत्र के स्वरुप** से बारे में हम

इब्रानियों (Hebrews) 1:9 “तू ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा”

वचन में पढ़ते हैं -

जी हाँ! यही “पुत्र का स्वरुप” है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

वे सभी जो इस अनन्त जीवन को ढूँढ़ते हैं, उन्हें अवश्य इस **“स्वरुप”** में **बढ़ना होगा।**

➡ परमेश्वर की दिव्य व्यवस्था/कानून की समझ - जो की **प्रेम की व्यवस्था/कानून है**, **"पुत्र के स्वरुप"** और **उस चरित्र** में बढ़ने की इस **नियमित प्रक्रिया** में पूरी मानवजाति के लिए **मार्दर्शन** बनेगी।

जिसके बारे में

मरकुस (Mark) 12:30,31 “और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। और दूसरी यह है, "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।” वचनों में व्यक्त किया गया है -

जी हाँ! आज्ञापालन करना बढ़ोतरी और समझ की ओर ले जाता है और अंततः

➡ **”पुत्र के स्वरुप”** में बनने में मदद करता है।

अंत में इस **"जीवन की नदी"** के बारे में हम एक और विषय को

यहेजकेल (Ezekiel) 47:11 “परन्तु ताल के पास जो दलदल ओर गड़हे हैं, उनका जल मीठा न होगा; वे खारे ही रहेंगे।” वचन में पढ़ते हैं -

☞ **यह क्या दर्शाता है?**

यह लोगों के उस एक समूह को दर्शाता है जो "जीवन के जल" का **विरोध** करेंगे।

ये वे लोग हैं जो **जानबूझकर आज्ञा नहीं मानेंगे**, जिनका वर्णन

यशायाह (Isaiah) 26:10 “दुष्ट पर चाहे दया भी की जाए तौभी वह धर्म को न सीखेगा; धर्मराज्य में भी वह कुटिलता करेगा, और यहोवा को महात्म्य उसे सूझ न पड़ेगा”।

वचन में किया गया है -

जी हाँ! यह **जानबूझकर आज्ञा न माननेवाले** लोगों का समूह है जो परमेश्वर और उनकी धार्मिकता की व्यवस्था / कानून का विरोध करेंगे।

➡ वे इस प्रकार से, शैतान और गिरे हुए दूतों की तरह **परमेश्वर के विरोधी** बन जायेंगे!!

इनके पास "पुत्र का स्वरूप" **नहीं होगा** बल्कि वे एक दूसरे ही **स्वरुप** में बढ़ जायेंगे, जिसके बारे में हम

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

भजन संहिता (Psalms) 52:3 “तू भलाई से बढ़कर बुराई में, और धर्म की बात से बढ़कर झूठ से प्रीति रखता है”। वचन में पढ़ते हैं -
जी हाँ! यह **शैतान का स्वरुप** है और सभी गिरे हुए दूत उसके साथ हैं!

और मानवजाति के कुछ लोग भी उस **"स्वरुप"** में बढ़ेंगे और ☞ उनके पास पुत्र (का स्वरुप) **नहीं** होगा।

वे "खारे" होंगे या दूसरी मृत्यु में **हमेशा के लिए नष्ट** कर दिए जाएंगे।
हम खारेपन या नमक बन जाने का मतलब उत्पत्ति (Genesis) 19:26 वचन में पढ़ते हैं:
उत्पत्ति (Genesis) 19:26 “लूत की पत्नी ने जो उसके पीछे थी दृष्टि फेर के पीछे की ओर देखा, और वह नमक का खम्भा बन गई”।
लूत की पत्नी **जानबूझकर आज्ञा न माननेवाले** समूह को दर्शाती है जो कि पाप के मार्गों से **फिरने** के धार्मिक निर्देशों का **पालन** करने से इंकार कर देते हैं। और इस प्रकार से **जीवन के लिए अयोग्य पाए जाते हैं** और **दूसरी मृत्यु** में नष्ट कर दिए जाते हैं। इसी को चिन्ह के रूप में इन वचनों में
➡ "वे खारे ही रहेंगे" कहकर दर्शाया गया है। (यहेजकेल (Ezekiel) 47:11)
(“given to salt”-> खारापन -> नमक बन जाना।)
☞ जी हाँ! इस प्रकार से आज हम **यरदन नदी** और **"जीवन की नदी"** जो कि **मृत सागर के पानी को जीवन देगी** - इन सब से जुड़े बड़े और रहस्मय पाठों को सीखते हैं।
सचमुच! सारी महिमा और स्तुति परमेश्वर की हो!

--आमीन--

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com